रमज़ान गाइड

दलीलों के साथ मसनून दुआएँ · रमज़ान की सुन्नतें · रोज़ाना मामूल · 30 दिन का ट्रैकर

شَهْرُ رَمَضَانَ ٱلَّذِىٓ أُنزِلَ فِيهِ ٱلْقُرْءَانُ

मुफ़्त — दूसरों तक पहुँचाएँ · QURANPLUSSCHOOL.COM

फ़हरिस्त

1. 🌙 रमज़ान — क़ुरआन का महीना
2. 🗓️ रमज़ान से पहले — तैयारी
3. 🌄 सहरी — बरकत वाला खाना
4. 🍽️ इफ़्तार — रोज़ा खोलना
5. 🤲 रोज़े को ख़ूबसूरत बनाएँ
6. 🕌 तरावीह और रात की नमाज़
7. 📖 क़ुरआन और सख़ावत
8. ✨ आख़िरी अशरा और शब-ए-क़द्र
9. 🌿 सहाबा-ए-किराम और सलफ़ का रमज़ान
10. 🤍 रोज़ाना की दुआएँ और अज़कार
11. ⏰ आसान रोज़ाना मामूल
12. 🎉 रमज़ान का इख़्तिताम और ईद
13. मेरा रमज़ान ट्रैकर

रमज़ान के लिए घर वालों की ज़रूरत की हर चीज़ एक जगह: मसनून दुआएँ अरबी, तर्जुमे और किताब के हवाले के साथ, नबी ﷺ और सहाबा-ए-किराम ने यह महीना कैसे गुज़ारा, बच्चों और बड़ों के लिए आसान मामूल, और 30 दिन का ट्रैकर जिसे ऑनलाइन निशान लगाएँ या प्रिंट करें।

🌙 रमज़ान — क़ुरआन का महीना

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ كُتِبَ عَلَيۡكُمُ ٱلصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُونَ

ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किए गए जैसे तुमसे पहले लोगों पर फ़र्ज़ किए गए थे, ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ।

सूरह अल-बक़रा (2:183)

شَهۡرُ رَمَضَانَ ٱلَّذِيٓ أُنزِلَ فِيهِ ٱلۡقُرۡءَانُ هُدٗى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَٰتٖ مِّنَ ٱلۡهُدَىٰ وَٱلۡفُرۡقَانِۚ فَمَن شَهِدَ مِنكُمُ ٱلشَّهۡرَ فَلۡيَصُمۡهُۖ ...

रमज़ान का महीना, जिसमें क़ुरआन नाज़िल किया गया जो लोगों के लिए हिदायत है ... तो तुममें से जो इस महीने को पाए वह इसके रोज़े रखे।

सूरह अल-बक़रा (2:185)

जब रमज़ान आता है तो जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं, जहन्नम के दरवाज़े बंद कर दिए जाते हैं और शैतानों को जकड़ दिया जाता है।

सहीह मुस्लिम 1079 · सहीह बुख़ारी 1899 · सहीह

जिसने ईमान के साथ और सवाब की उम्मीद से रमज़ान के रोज़े रखे, उसके पिछले गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं।

सहीह बुख़ारी 38 · सहीह मुस्लिम 760 · सहीह

अल्लाह तआला फ़रमाता है: “रोज़ा मेरे लिए है और मैं ही इसका बदला दूँगा।” रोज़ेदार के लिए दो ख़ुशियाँ हैं: एक इफ़्तार के वक़्त, और एक जब वह अपने रब से मिलेगा।

सहीह बुख़ारी 1904 · सहीह मुस्लिम 1151 · सहीह

जन्नत में एक दरवाज़ा है जिसका नाम “रय्यान” है; उससे सिर्फ़ रोज़ेदार दाख़िल होंगे।

सहीह बुख़ारी 1896 · सहीह मुस्लिम 1152 · सहीह

🗓️ रमज़ान से पहले — तैयारी

नबी ﷺ रमज़ान के अलावा किसी महीने में शाबान से ज़्यादा रोज़े नहीं रखते थे — यह दिल और जिस्म की तैयारी है।

सहीह बुख़ारी 1969 · सहीह मुस्लिम 1156 · सहीह

“चाँद देखकर रोज़ा रखो और चाँद देखकर रोज़े ख़त्म करो, और अगर बादल हों तो तीस दिन पूरे करो।” अपने इलाक़े में चाँद देखने के ऐलान पर अमल करें।

सहीह बुख़ारी 1909 · सहीह मुस्लिम 1081 · सहीह

रमज़ान से एक या दो दिन पहले रोज़ा न रखो — सिवाय उसके जो पहले से उस दिन रोज़ा रखने का आदी हो।

सहीह बुख़ारी 1914 · सहीह मुस्लिम 1082 · सहीह

“आमाल का दारोमदार नीयतों पर है।” रोज़े की नीयत दिल में होती है — नबी ﷺ से कोई ख़ास अल्फ़ाज़ मनक़ूल नहीं; रोज़े के इरादे से सहरी के लिए उठना भी नीयत है।

सहीह बुख़ारी 1 · सहीह

- तीन लक्ष्य लिखें: एक क़ुरआन के लिए, एक नमाज़ के लिए और एक सदक़े के लिए।
- महीना शुरू होने से पहले बच्चों के साथ इस गाइड की दुआएँ याद करें।
- पिछले साल के क़ज़ा रोज़े पूरे करें, रूठे रिश्तेदारों से सुलह करें और छोटे झगड़े ख़त्म करें।
- नींद का प्लान बनाएँ: जल्दी सोने से सहरी, फ़ज्र और रात की नमाज़ आसान हो जाती है।

सहरी — बरकत वाला खाना

"सहरी खाओ क्योंकि सहरी में बरकत है।" चंद खजूरें या पानी का एक गिलास भी सहरी है।

सहीह बुख़ारी 1923 · सहीह मुस्लिम 1095 · सहीह

नबी ﷺ देर से सहरी करते थे: आपकी सहरी और फ़ज्र की नमाज़ के दरमियान तक़रीबन पचास आयतें पढ़ने जितना वक़्त होता था।

सहीह बुख़ारी 1921 · सहीह मुस्लिम 1097 · सहीह

... وَكُلُوا۟ وَٱشْرَبُوا۟ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَكُمُ ٱلْخَيْطُ ٱلْأَبْيَضُ مِنَ ٱلْخَيْطِ ٱلْأَسْوَدِ مِنَ ٱلْفَجْرِ ۖ ثُمَّ أَتِمُّوا۟ ٱلصِّيَامَ إِلَى ٱلَّيْلِ ...

... और खाओ पियो यहाँ तक कि फ़ज्र की सफ़ेद धारी काली धारी से वाज़ेह हो जाए, फिर रात तक रोज़ा पूरा करो।

सूरह अल-बक़रा (2:187)

- अपने शहर के सहरी व इफ़्तार के औक़ात हमारे रमज़ान टाइम टेबल पेजों पर देखें।
- रात भर आहिस्ता आहिस्ता पानी पिएँ; खजूर, अंडा, दही और देर तक साथ देने वाली ग़िज़ा लें।
- फ़ज्र से पहले के आख़िरी मिनट इस्तिग़फ़ार में लगाएँ — सहर का वक़्त मग़फ़िरत माँगने का ख़ास वक़्त है (आल-ए-इमरान 3:17)।

🍽 इफ़्तार — रोज़ा खोलना

"लोग उस वक़्त तक भलाई पर रहेंगे जब तक इफ़्तार में जल्दी करेंगे।" सूरज डूबते ही रोज़ा खोलें।

सहीह बुख़ारी 1957 · सहीह मुस्लिम 1098 · सहीह

नबी ﷺ नमाज़ से पहले ताज़ा खजूरों से रोज़ा खोलते, वह न होतीं तो छुहारों से, और वह भी न होते तो पानी के चंद घूँट पी लेते।

सुनन अबी दाऊद 2356 · जामे तिर्मिज़ी 696 · हसन

मसनून **रोज़ा खोलने के बाद**

ذَهَبَ الظَّمَأُ، وَابْتَلَّتِ الْعُرُوقُ، وَثَبَتَ الْأَجْرُ إِنْ شَاءَ اللَّهُ

Dhahabaẓ-ẓama'u, wabtallatil-'urūq, wa thabatal-ajru in shā' Allāh.

प्यास बुझ गई, रगें तर हो गईं, और अज्र साबित हो गया अगर अल्लाह ने चाहा।

सुनन अबी दाऊद 2357 · हसन

मसनून **जब कोई आपको इफ़्तार कराए**

أَفْطَرَ عِنْدَكُمُ الصَّائِمُونَ، وَأَكَلَ طَعَامَكُمُ الْأَبْرَارُ، وَصَلَّتْ عَلَيْكُمُ الْمَلَائِكَةُ

Afṭara 'indakumuṣ-ṣā'imūn, wa akala ṭa'āmakumul-abrār, wa ṣallat 'alaykumul-malā'ikah.

रोज़ेदार तुम्हारे यहाँ इफ़्तार करें, नेक लोग तुम्हारा खाना खाएँ, और फ़रिश्ते तुम्हारे लिए रहमत की दुआ करें।

सुनन अबी दाऊद 3854 · सहीह — अल्लामा अलबानी के मुताबिक़

“जिसने किसी रोज़ेदार को इफ़्तार कराया उसे उस जैसा अज्र मिलेगा, और रोज़ेदार के अज्र में कोई कमी नहीं होगी।”

जामे तिर्मिज़ी 807 · सहीह

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِى عَنِّى فَإِنِّى قَرِيبٌ ۖ أُجِيبُ دَعْوَةَ ٱلدَّاعِ إِذَا دَعَانِ ...

जब मेरे बंदे आपसे मेरे बारे में पूछें तो मैं क़रीब हूँ, पुकारने वाले की पुकार का जवाब देता हूँ जब वह मुझे पुकारे ... (यह आयत रोज़ों की आयतों के बीच में है — इसलिए रोज़े में और इफ़्तार से पहले ख़ूब दुआ करें।)

सूरह अल-बक़रा (2:186)

🤲 रोज़े को ख़ूबसूरत बनाएँ

"जो शख़्स झूठ बोलना और उस पर अमल करना न छोड़े तो अल्लाह को उसके खाना पीना छोड़ने की कोई ज़रूरत नहीं।" रोज़ा ज़बान, आँख और हाथ का भी है।

सहीह बुख़ारी 1903 · सहीह

रोज़े की हालत में अगर कोई आपसे झगड़े या बुरा भला कहे तो कह दें: "मैं रोज़े से हूँ।"

सहीह बुख़ारी 1904 · सहीह मुस्लिम 1151 · सहीह

अगर भूलकर कुछ खा पी लें तो रोज़ा पूरा करें — यह अल्लाह ने आपको खिलाया पिलाया।

सहीह बुख़ारी 1933 · सहीह मुस्लिम 1155 · सहीह

... وَمَن كَانَ مَرِيضًا أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۚ يُرِيدُ ٱللَّهُ بِكُمُ ٱلْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ ٱلْعُسْرَ ...

... और जो बीमार हो या सफ़र में हो तो दूसरे दिनों में गिनती पूरी करे। अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी चाहता है, सख़्ती नहीं चाहता। — जो बुज़ुर्ग या दाइमी मरीज़ कभी रोज़ा न रख सकें वह हर रोज़े के बदले फ़िदया (एक मिस्कीन को खाना) दें; अपनी सूरत-ए-हाल किसी आलिम से पूछ लें।

सूरह अल-बक़रा (2:185)

ख़्वातीन अय्याम में रोज़ा नहीं रखतीं; सय्यिदा आइशा (रज़ि.) ने फ़रमाया: "हमें रोज़ों की क़ज़ा का हुक्म दिया जाता था, नमाज़ की क़ज़ा का नहीं।"

सहीह मुस्लिम 335 · सहीह

बच्चों की मश्क़: सहाबा-ए-किराम अपने छोटे बच्चों को भी रोज़ा रखवाते और इफ़्तार तक बहलाने के लिए उन्हें ऊन के खिलौने बना देते। (यह आशूरा के रोज़े का वाक़िआ है; उलमा इसे रमज़ान के लिए बच्चों की तरबियत की दलील बनाते हैं।)

सहीह बुख़ारी 1960 · सहीह मुस्लिम 1136 · सहीह

तरावीह और रात की नमाज़

> “जिसने ईमान के साथ और सवाब की उम्मीद से रमज़ान में क़ियाम किया (रात की नमाज़ पढ़ी) उसके पिछले गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं।”
>
> **सहीह बुख़ारी 37 · सहीह मुस्लिम 759 · सहीह**

> नबी ﷺ ने चंद रातें मस्जिद में जमाअत से रात की नमाज़ पढ़ाई, फिर घर में पढ़ी और फ़रमाया कि मुझे डर हुआ कि कहीं यह तुम पर फ़र्ज़ न कर दी जाए।
>
> **सहीह बुख़ारी 2012 · सहीह मुस्लिम 761 · सहीह**

> बाद में सय्यिदना उमर (रज़ि.) ने लोगों को रमज़ान की रात की नमाज़ के लिए एक इमाम, सय्यिदना उबय बिन काब (रज़ि.) के पीछे जमा कर दिया।
>
> **सहीह बुख़ारी 2010 · सहीह**

तरावीह अपनी मक़ामी मस्जिद के साथ या घर में घर वालों के साथ सुकून और दिल की हाज़िरी से पढ़ें। बच्चे चंद रकअतों से शुरू करें और आहिस्ता आहिस्ता बढ़ाएँ।

📖 क़ुरआन और सख़ावत

नबी ﷺ सब लोगों से ज़्यादा सख़ी थे, और रमज़ान में सबसे ज़्यादा, जब जिब्रील (अ.) हर रात आपसे मिलते और क़ुरआन का दौर करते।

सहीह बुख़ारी 6 · सहीह मुस्लिम 2308 · सहीह

आप ﷺ की ज़िंदगी के आख़िरी साल उस रमज़ान में क़ुरआन का दौर दो मर्तबा हुआ।

सहीह बुख़ारी 4998 · सहीह

- रोज़ाना एक पारा: हर नमाज़ के बाद 4 पन्ने पढ़ें (20 पन्ने ≈ एक पारा) तो महीने में क़ुरआन मुकम्मल हो जाएगा।
- बच्चे: रोज़ाना क़ायदे या नाज़रा का एक पन्ना या एक छोटी सूरह — और इफ़्तार पर उसे दोहराएँ।
- हर दिन कुछ न कुछ दें, चाहे थोड़ा: पड़ोसी को खाना, सदक़े के डिब्बे में सिक्का, या एक अच्छा बोल।

✨ आख़िरी अशरा और शब-ए-क़द्र

नबी ﷺ आख़िरी अशरे में जितनी मेहनत करते उतनी किसी और वक़्त में नहीं करते थे।

सहीह मुस्लिम 1175 · सहीह

जब आख़िरी अशरा शुरू होता तो आप ﷺ कमर कस लेते, रातों को जागते और अपने घर वालों को भी जगाते।

सहीह बुख़ारी 2024 · सहीह मुस्लिम 1174 · सहीह

आप ﷺ रमज़ान के आख़िरी अशरे में एतिकाफ़ फ़रमाते थे।

सहीह बुख़ारी 2026 · सहीह मुस्लिम 1172 · सहीह

“शब-ए-क़द्र को आख़िरी अशरे की ताक़ रातों में तलाश करो” — यानी 21, 23, 25, 27 और 29 वीं रात।

सहीह बुख़ारी 2017 · सहीह

“जो शब-ए-क़द्र में ईमान के साथ और सवाब की उम्मीद से क़ियाम करे उसके पिछले गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं।”

सहीह बुख़ारी 1901 · सहीह

إِنَّآ أَنزَلْنَٰهُ فِى لَيْلَةِ ٱلْقَدْرِ ﴿١﴾ وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا لَيْلَةُ ٱلْقَدْرِ ﴿٢﴾ لَيْلَةُ ٱلْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ ﴿٣﴾ تَنَزَّلُ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ وَٱلرُّوحُ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِم مِّن كُلِّ أَمْرٍ ﴿٤﴾ سَلَٰمٌ هِىَ حَتَّىٰ مَطْلَعِ ٱلْفَجْرِ ﴿٥﴾

हमने इसे शब-ए-क़द्र में नाज़िल किया। और आपको क्या मालूम कि शब-ए-क़द्र क्या है? शब-ए-क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है। इसमें फ़रिश्ते और रूह (जिब्रील) अपने रब के हुक्म से हर काम के लिए उतरते हैं। वह रात सरासर सलामती है, फ़ज्र तुलू होने तक।

सूरह अल-क़द्र (97:1–5)

मसनून शब-ए-क़द्र में — सय्यिदा आइशा (रज़ि.) ने पूछा क्या पढ़ूँ तो नबी ﷺ ने यह दुआ सिखाई

اللَّهُمَّ إِنَّكَ عَفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّي

Allāhumma innaka ʿafuwwun tuḥibbul-ʿafwa faʿfu ʿannī.

ऐ अल्लाह! तू बहुत माफ़ करने वाला है, माफ़ करना पसंद करता है, पस मुझे माफ़ फ़रमा दे।

जामे तिर्मिज़ी 3513 · सुनन इब्ने माजा 3850 · सहीह — अल्लामा अलबानी के मुताबिक़

🌿 सहाबा-ए-किराम और सलफ़ का रमज़ान

यह रिवायतें पहली नस्लों के रमज़ान की रूह दिखाती हैं। पहली दो सहीह बुख़ारी से हैं; बाक़ी इब्ने रजब हंबली (वफ़ात 795 हि.) ने लताइफ़ुल मआरिफ़ में जमा की हैं।

सय्यिदना उमर फ़ारूक़ (रज़ि.)

रमज़ान की रात में लोगों को अलग अलग टोलियों में नमाज़ पढ़ते देखा तो सबको एक क़ारी के पीछे जमा कर दिया ताकि पूरी मस्जिद इकट्ठी नमाज़ पढ़े।

सहीह बुख़ारी 2010

सहाबा-ए-किराम के घर

बच्चों को रोज़े की तरबियत दी जाती (जैसे आशूरा के दिन); जब वह खाने के लिए रोते तो इफ़्तार तक ऊन के खिलौने दिए जाते — सब्र मोहब्बत से सिखाया जाता।

सहीह बुख़ारी 1960

इमाम ज़ुहरी

जब रमज़ान आता तो फ़रमाते: “यह तो बस क़ुरआन की तिलावत और खाना खिलाने का महीना है।”

इब्ने रजब हंबली, लताइफ़ुल मआरिफ़

इमाम मालिक

रमज़ान में हदीस के दर्स और इल्मी मजलिसें छोड़कर मुसहफ़ से क़ुरआन की तिलावत में लग जाते।

इब्ने रजब हंबली, लताइफ़ुल मआरिफ़

सुफ़ियान सौरी

रमज़ान आता तो दूसरी नफ़्ली इबादात छोड़कर क़ुरआन पढ़ने में लग जाते।

इब्ने रजब हंबली, लताइफ़ुल मआरिफ़

सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.)

अक्सर सिर्फ़ मिस्कीनों के साथ बैठकर ही इफ़्तार करते।

इब्ने रजब हंबली, लताइफ़ुल मआरिफ़

मुअल्ला बिन फ़ज़्ल, सलफ़ के बारे में

“वह छह महीने अल्लाह से दुआ करते कि उन्हें रमज़ान नसीब हो, फिर छह महीने दुआ करते कि अल्लाह उनके रमज़ान को क़ुबूल फ़रमाए।”

इब्ने रजब हंबली, लताइफ़ुल मआरिफ़

🤍 रोज़ाना की दुआएँ और अज़कार

हरे कार्ड सुन्नत से मुस्तनद सनद के साथ हैं। आख़िर में नारंगी कार्ड मशहूर इज़ाफ़ी दुआएँ हैं — उनकी किताब और दर्जा साफ़ लिखा है ताकि आप ख़ुद फ़ैसला कर सकें।

मसनून **नया चाँद देखकर (रमज़ान या किसी भी महीने का)**

اللَّهُمَّ أَهِلَّهُ عَلَيْنَا بِالْيُمْنِ وَالْإِيمَانِ، وَالسَّلَامَةِ وَالْإِسْلَامِ، رَبِّي وَرَبُّكَ اللَّهُ

Allāhumma ahlilhu ʻalaynā bil-yumni wal-īmān, was-salāmati wal-islām, rabbī wa rabbukallāh.

ऐ अल्लाह! इस चाँद को हम पर बरकत और ईमान, सलामती और इस्लाम के साथ तुलू फ़रमा। (ऐ चाँद) मेरा और तेरा रब अल्लाह है।

जामे तिर्मिज़ी 3451 · सहीह — अल्लामा अलबानी के मुताबिक़

↑ ऊपर देखें: रोज़ा खोलने के बाद · जब कोई आपको इफ़्तार कराए · शब-ए-क़द्र में

मसनून **किसी भी वक़्त — वह दुआ जो नबी ﷺ सबसे ज़्यादा माँगते थे**

رَبَّنَآ ءَاتِنَا فِى ٱلدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِى ٱلْءَاخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ ٱلنَّارِ

Rabbanā ātinā fid-dunyā ḥasanatan wa fil-ākhirati ḥasanatan wa qinā ʻadhāban-nār.

ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में भलाई दे और आख़िरत में भलाई दे, और हमें आग के अज़ाब से बचा।

सूरह अल-बक़रा (2:201) · सहीह बुख़ारी 6389 · सहीह मुस्लिम 2690 · सहीह

मसनून **सुबह व शाम — सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार**

اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، خَلَقْتَنِي وَأَنَا عَبْدُكَ، وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ، أَبُوءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ، وَأَبُوءُ لَكَ بِذَنْبِي، فَاغْفِرْ لِي، فَإِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ

Allāhumma anta rabbī lā ilāha illā ant, khalaqtanī wa ana ʻabduk, wa ana ʻalā ʻahdika wa waʻdika mastaṭaʻt, aʻūdhu bika min sharri mā ṣanaʻt, abū'u laka bi-niʻmatika ʻalayy, wa abū'u laka bi-dhanbī, faghfir lī, fa-innahu lā yaghfirudh-dhunūba illā ant.

ऐ अल्लाह! तू मेरा रब है, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं। तूने मुझे पैदा किया और मैं तेरा बंदा हूँ, और जहाँ तक हो सके तेरे अहद और वादे पर क़ायम हूँ। मैं अपने किए के शर से तेरी पनाह माँगता हूँ। तेरी नेमतों का इक़रार करता हूँ और अपने गुनाहों का एतिराफ़ करता हूँ, पस मुझे बख़्श दे, क्योंकि तेरे सिवा कोई गुनाह नहीं बख़्शता।

सहीह बुख़ारी 6306 · सहीह

मसनून **दिन में 100 बार — गुनाह मिट जाते हैं चाहे समुंदर की झाग जितने हों**

سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ

Subḥānallāhi wa biḥamdih.

अल्लाह पाक है और अपनी तारीफ़ के साथ।

सहीह बुख़ारी 6405 · सहीह मुस्लिम 2691 · सहीह

मसनून **दिन में 100 बार — दस ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब, 100 नेकियाँ लिखी और 100 गुनाह मिटाए जाते हैं**

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

Lā ilāha illallāhu waḥdahu lā sharīka lah, lahul-mulku wa lahul-ḥamd, wa huwa ‘alā kulli shay’in qadīr.

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, बादशाही उसी की है और तारीफ़ उसी के लिए है, और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।

सहीह बुख़ारी 6403 · सहीह मुस्लिम 2691 · सहीह

मसनून **हर नमाज़ के बाद — नबी ﷺ ने सय्यिदना मुआज़ (रज़ि.) को सिखाई**

اللَّهُمَّ أَعِنِّي عَلَى ذِكْرِكَ، وَشُكْرِكَ، وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ

Allāhumma a‘innī ‘alā dhikrika wa shukrika wa ḥusni ‘ibādatik.

ऐ अल्लाह! अपने ज़िक्र, अपने शुक्र और अपनी अच्छी इबादत पर मेरी मदद फ़रमा।

सुनन अबी दाऊद 1522 · सहीह — अल्लामा अलबानी के मुताबिक़

मसनून **वालिदैन के लिए — रोज़ाना**

رَّبِّ ٱرْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيَانِى صَغِيرًا

Rabbir-ḥamhumā kamā rabbayānī ṣaghīrā.

ऐ मेरे रब! इन दोनों पर रहम फ़रमा जैसे उन्होंने बचपन में मेरी परवरिश की।

सूरह अल-इसरा (17:24)

इज़ाफ़ी इफ़्तार के वक़्त — बहुत मशहूर

اللَّهُمَّ لَكَ صُمْتُ، وَعَلَى رِزْقِكَ أَفْطَرْتُ

Allāhumma laka ṣumtu wa ʿalā rizqika afṭart.

ऐ अल्लाह! मैंने तेरे लिए रोज़ा रखा और तेरे रिज़्क़ से इफ़्तार किया।

इसकी सनद मुरसल है (एक रावी दरमियान से ग़ायब है), इसलिए मुहद्दिसीन इसे ज़ईफ़ कहते हैं; मफ़हूम अच्छा है और आम दुआ के तौर पर पढ़ी जा सकती है। इफ़्तार की मुस्तनद दुआ ऊपर वाली "ज़-हबज़्ज़मउ ..." है।

सुनन अबी दाऊद 2358 · सनद ज़ईफ़ — नोट देखें

इज़ाफ़ी रजब और शाबान में रमज़ान तक पहुँचने की दुआ

اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِي رَجَبٍ وَشَعْبَانَ، وَبَلِّغْنَا رَمَضَانَ

Allāhumma bārik lanā fī Rajabin wa Shaʿbān, wa ballighnā Ramaḍān.

ऐ अल्लाह! हमारे लिए रजब और शाबान में बरकत दे और हमें रमज़ान तक पहुँचा।

सय्यिदना अनस (रज़ि.) से ज़ईफ़ सनद के साथ मरवी है; इब्ने रजब ने लताइफ़ुल मआरिफ़ में ज़िक्र की है। रमज़ान तक पहुँचने की दुआ किसी भी अल्फ़ाज़ में माँगना अच्छा है।

तबरानी व बैहक़ी (सनद ज़ईफ़) · सनद ज़ईफ़ — नोट देखें

इज़ाफ़ी सहाबा-ए-किराम की ईद मुबारकबाद

تَقَبَّلَ اللَّهُ مِنَّا وَمِنْكُمْ

Taqabbalallāhu minnā wa minkum.

अल्लाह हमसे और आपसे क़ुबूल फ़रमाए।

जुबैर बिन नुफ़ैर कहते हैं कि सहाबा-ए-किराम ईद पर एक दूसरे से यह कहते थे; हाफ़िज़ इब्ने हजर ने इसकी सनद को हसन कहा है।

इब्ने हजर, फ़तहुल बारी (सनद हसन) · सलफ़ का अमल

⏰ आसान रोज़ाना मामूल

यह एक तजवीज़ है, पाबंदी नहीं — अपने घर के हिसाब से बदल लें। पाँचों नमाज़ों के बाद “4 पन्ने” पढ़ने से महीने में क़ुरआन मुकम्मल हो जाता है।

	बच्चा (7 से 12 साल)	घर पर	नौकरी / पढ़ाई वाले
फ़ज्र से पहले	घर वालों के साथ सहरी, एक दुआ	दो रकअत तहज्जुद, सहरी, इस्तिग़फ़ार	सहरी, इस्तिग़फ़ार, दिन की तैयारी
फ़ज्र के बाद	फ़ज्र की नमाज़, सुबह के अज़कार, फिर सो जाएँ	फ़ज्र, सुबह के अज़कार, क़ुरआन के 4 पन्ने	फ़ज्र, सुबह के अज़कार, 4 पन्ने, थोड़ा आराम
सुबह	स्कूल या क़ुरआन क्लास; क़ायदा / नाज़रा का पन्ना	घर के काम, ज़बान पर ज़िक्र	ईमानदारी से काम; रास्ते में ज़िक्र
ज़ुहर	ज़ुहर की नमाज़, क़ैलूला	ज़ुहर, 4 पन्ने, थोड़ी नींद	काम पर ज़ुहर, वक़्फ़े में 4 पन्ने
अस्र	अस्र, इस गाइड की एक दुआ या सवाल याद करें	अस्र, 4 पन्ने, इफ़्तार की तैयारी में मदद	अस्र, घर जाते हुए 4 पन्ने
मग़रिब से पहले	घर वालों के साथ दुआ — यह क़ुबूलियत का वक़्त है	शाम के अज़कार, ख़ामोश दुआ	शाम के अज़कार, दुआ
इफ़्तार और मग़रिब	खजूर, पानी, इफ़्तार की दुआ, मग़रिब	पहले खजूर, इफ़्तार की दुआ, मग़रिब, फिर खाना	यही — और किसी को इफ़्तार में शरीक करें
रात	इशा, तरावीह की चंद रकअतें, जल्दी सोना	इशा, तरावीह, 4 पन्ने, जल्दी सोना	इशा, तरावीह, कल का प्लान, जल्दी सोना

🎉 रमज़ान का इख़्तिताम और ईद

सदक़ा-ए-फ़ित्र घर के हर मुसलमान की तरफ़ से, छोटा हो या बड़ा, वाजिब है और ईद की नमाज़ से पहले देना चाहिए। हर साल इसकी मिक़दार मक़ामी उलमा ऐलान करते हैं।

सहीह बुख़ारी 1503 · सहीह मुस्लिम 984 · सहीह

وَلِتُكْمِلُوا۟ ٱلْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا۟ ٱللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَىٰكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ...

... ताकि तुम गिनती पूरी करो और अल्लाह की बड़ाई बयान करो कि उसने तुम्हें हिदायत दी, और ताकि तुम शुक्र करो। — ईदगाह जाते हुए तकबीर पढ़ें।

सूरह अल-बक़रा (2:185)

ईदुल फ़ित्र के दिन नबी ﷺ कुछ खजूरें खाए बग़ैर (ईदगाह) नहीं निकलते थे, और ताक़ अदद में खाते थे।

सहीह बुख़ारी 953 · सहीह

आप ﷺ ईद की नमाज़ के लिए एक रास्ते से जाते और दूसरे रास्ते से वापस आते।

सहीह बुख़ारी 986 · सहीह

“जिसने रमज़ान के रोज़े रखे फिर उसके बाद शव्वाल के छह रोज़े रखे तो यह पूरे साल के रोज़ों की तरह है।”

सहीह मुस्लिम 1164 · सहीह

↑ ऊपर देखें: सहाबा-ए-किराम की ईद मुबारकबाद

मेरा रमज़ान ट्रैकर — दिन 1–15

दिन	रोज़ा	फ़ज्र	ज़ुहर	अस्र	मग़रिब	इशा	तरावीह	क़ुरआन	अज़्कार	सदक़ा	दुआ
1											
2											
3											
4											
5											
6											
7											
8											
9											
10											
11											
12											
13											
14											
15											

मेरा रमज़ान ट्रैकर — दिन 16–30

दिन	रोज़ा	फ़ज्र	ज़ुहर	अस्र	मग़रिब	इशा	तरावीह	क़ुरआन	अज़कार	सदक़ा	दुआ
16											
17											
18											
19											
20											
21											
22											
23											
24											
25											
26											
27											
28											
29											
30											



Quran Plus School

क़ुरआन प्लस स्कूल — मुस्तनद मर्द व ख़्वातीन उस्तादों के साथ ऑनलाइन क़ुरआन क्लासेज़, आपके वक़्त के मुताबिक़ 24 घंटे। पहली क्लास मुफ़्त।

quranplusschool.com

WhatsApp: +92 317 0924964 · +971 54 145 9759 (UAE)

इस किताबचे के हर हदीस नंबर को असल किताब से मिलाकर चेक किया गया है; क़ुरआनी मतन मेयारी उस्मानी मुसहफ़ से लिया गया है। अगर कोई ग़लती नज़र आए तो व्हाट्सऐप पर ज़रूर बताएँ।